प्रसाद के काव्य में आशा और आस्थावादी दृष्टि

डॉ० कल्पना माहेश्वरी
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
ए०के०पी० (पी०जी०) कॉलिज, खुर्जा (बुलन्दशहर) उ०प्र०

प्रसाद की मान्यताओं के उज्ज्वल प्रमाण आस्था की शक्ति और आशा के प्रेरक तत्व उनके सम्पूर्ण काव्य में दैवीप्यमान है। आशा और आस्था के ओजस्वी स्वर मानव–जीवन की ऊर्जा के स्वस्थ प्रमाण है। प्रसाद जी के काव्य में समाज की विषमताओं, विकृतियों के चित्र ही अंकित नहीं हुए है अपितु उनसे संघर्ष कर विजयी होने की भी एक विश्वासमयी संकल्प–शक्ति स्थापित हुयी है, वह युग युगीन समस्याओं को उठाकर स्वस्थ समाधान भी प्रस्तुत करते है। सत्–असत् सात्विकी और तामसी प्रवृत्ति अथवा मंगल और अमंगल में द्वन्द्व दिखाकर अंत में सत प्रवृत्ति या मंगल की विजय घोषित कर जीवन के सत्य के प्रति मानव की आस्था जागृत करते है। प्रसाद–काव्य में जीवंत कर्मठ चेतना का स्फुरित जागरण है, वह मनुष्य को अकर्मण्य व निष्क्रिय नहीं बनाता अपितु प्रवृत्ति का सन्देश देकर एक आशावादी दृष्टि प्रस्तुत करता है।

''चलो सदा चलना ही तुमको श्रेय है
खड़े रहो मत कर्म–मार्ग विस्तीर्ण है।''[1]

जीवन के निर्माण परक पक्ष को लेकर कवि प्रसाद की प्रगतिकामी चेतना अंधकार पर विजय प्राप्त कर शशि–किरणों के स्वागत को उत्सुक है–

''अंधकार का जलधि लांघकर आयेगी शशि किरनें
अंतरिक्ष छिड़केगा वन वन निशि में मधुर तुहिन को।''[2]

प्रसाद जी मानव–जीवन के स्वस्थ विकास के आकांक्षी है वह नित्य नूतन आनन्द की सृष्टि करना चाहते है और इसके लिये वह कर्म–सौन्दर्य को प्रधानता देते है वह जीवन में पराजय और निराशा को नहीं स्वीकारते क्योंकि नैराय मनुष्य को जड़ बना देता है, इसीलिए कामायनी में तप में रत मनु को श्रद्धा तरल आकांक्षाओं और सरस आशाओं से पूर्ण जीवन के प्रवृत्ति पक्ष की ओर उन्मुख करती हुयी कहती है–

''तप नहीं केवल जीवन सत्य
करूण यह क्षणिक दीन अवसाद,
तरल आकांक्षा से है भरा
सो रहा आशा का आह्लाद।
बनो संसृति के मूल रहस्य
तुम्ही से फेलेगी यह बेल

विश्व भर सौरभ से भर जाय
सुमन के खेलों सुन्दर खेल।''[3]

वस्तुतः प्रसाद शैव दर्शन के अनुयायी थे। शैव दर्शन जीवन के चेतन तत्वों की ओर आकर्षित करता है न कि जड़ तत्वों की ओर। प्रसाद के सम्पूर्ण काव्य में चेतना का ही स्वर अनुगुंजित है उनका काव्य मानव जीवन की आस्था का काव्य है वह दुख में भी मनुष्य को निराशा से आविर्भूत कर जड़ नहीं बनाता अपितु आशा की चेतना देकर जीवन के प्रति आस्था जगाता है।

''दुख की पिछली रजनी बीच
विकसता सुख का नवल प्रभात
एक परदा यह झीना नील
छिपाये है जिसमें सुख गात।''[4]

कवि की जीवन दृष्टि में अतिशय विराम नहीं एक संतुलित जीवन दृष्टि है–जो विषमताओं के धुएँ और कुहरे को हटा देना चाहती है–

''नित्य समरसता का अधिकार
उमड़ता कारण जलधि समान
व्यथा की नीली लहरों बीच
बिखरते है सुख मणिकण द्युतिमान।''[5]

सुख और दुख दोनों ही मानव जीवन के आवश्यक पक्ष है दुख की अग्नि में तपकर ही अंतर–कंचन निखरता है। प्रसाद का काव्य जीवन की एकांगिता को नहीं स्वीकारता वहां तो जीवन पूर्ण आकर्षण का केन्द्र है इस आकर्षण में बंधकर ही आत्मा का विस्तार संभव है–

''डरो मत अरे अमृत सन्तान
अग्रसर है मंगलमय वृद्धि
पूर्ण आकर्षण जीवन केन्द्र
खिंची आवेगी सकल समृद्धि।''[6]

देखा जाये तो प्रसाद जी का वैयक्तिक जीवन–दर्शन ही उनके काव्य का दर्शन है। पारिवारिक जीवन के संघर्षो को देखते हुए जिस संकल्पमयी शक्ति ने उन्हें प्रेरणा दी वही उनके काव्य ही नहीं सम्पूर्ण साहित्य में स्थापित हुयी है। जीवन की असम्भावित दुखद घटनाओं की पीड़ायें झेलते हुए भी उन्हे जीवन के प्रति गहरी आस्था रही उनके जीवन में निराशा कभी अपनी छाप न छोड़ पायी उनका ह्दय सदैव आशा के जागरण लोक में विचरण करता रहता था, यही आशावादी और आस्था पूर्ण चेतना उनके काव्य में सर्वत्र बिखरी हुयी है–

''चमकूंगा धूल कणों में सौरभ हो उड़ जाउंगा
पाउंगा कहीं तुम्हें तो गृह पथ में टकराउंगा।''[7]

वह निराशा वे जड़ अंधकार से निकलकर आशा के सुनहरे प्रभात को आह्वान करता है।

''अब जागो जीवन के प्रभात
वसुधा पर ओस बने बिखरे
हिमकन आंसू जो क्षोभ भरे
ऊषा बटोरती अरूण गात।''[8]

कामायनी में प्रकृति के माध्यम से आशा का ऐसा सुन्दर संचार किया है कि जिससे तपोरंत मनु को सृष्टि कर्म में प्रवृत्त होने की मधुर प्रेरणा मिल रही है।

''ऊषा सुनहले तीर बरसती जय लक्ष्मी सी उदित हुयी
उधर पराजित काल रात्रि भी जल में अन्तर्निहित हुयी
धीरे धीरे हिम आच्छादन हटने लगा धरातल से
जगी वनस्पतियां अलसाई मुख धोती शीतल जल से,[9]
कर रही लीलामय आनन्द महाचित सजग हुयी सी व्यस्त
विश्व का उन्मीलन अभिराम इसी में सब होते अनुरक्त''[10]

प्रसाद को मानव जीवन के प्रति इतनी गहन आस्था है कि वह कह उठते है –

''इस स्वप्नमयी संसृति के सच्चे जीवन तुम जागो
मंगल किरणों से रंजित मेरे सुन्दरतम जागो।
अभिलाषा के मनसिज में सरसिजसी आंखे खोलो
मधुपो से मधु गुंजार करो कलरव से कुछ बोलो।''[11]

कवि की आस्था पूर्ण आशा, दुर्बलता और पराजय के बढ़ते व्यापार के स्थान पर शक्ति का क्रीड़ामय संचार देखना चाहती है–

''विश्व की दुर्बलता बल बने,
पराजय का बढ़ता व्यापार,
हंसाता रहे उसे सविलास
शक्ति का क्रीड़ामय संचार।''[12]

जीवन के कोलाहल पूर्ण, विषाद युक्त विलीन मन में आस्था की ज्योति रेखा आशा की किरणों के आलोक में जीवन के मधुमास की प्रतीक्षा में सजग है–

''कल्पना अखिल जीवन की, किरणों से दृगतारा की,
अभिषेक करे प्रतिनिधि बन आलोकमयी धारा की''[13]

इस प्रकार आशा और आस्था की संकल्पमयी शक्ति के ओजपूर्ण स्वर से अनुगुंजित सम्पूर्ण प्रसाद काव्य चेतना के सुन्दर इतिहास का एक नवीन मानव संस्कृति के रूप में निर्माण कर मानवता को विजयिनी बनाने की कामना व्यक्त करता है। जड़ता, निष्क्रियता और

उदासीनता से परे वह आशावादी स्वस्थ जीवन दर्शन को लेकर विश्व की कल्याणमयी प्रगति में तत्पर है। इसी कारण प्रसाद साहित्य दुखांत नहीं होने पाया। वहां सतही दृष्टि से जीवन और साहित्य का एक्य नहीं है अपितु भावनात्मक गहराई की पेठ है। कर्तव्य भावना से अनुप्राणित रहकर वह त्याग करना सिखलाता है। जीवन निर्माण की स्वस्थ प्रेरक शक्ति आशा और आस्था को संजोये वह जीवन के सुन्दर कर्म–मार्ग की साधना का संकेत देता है।

संदर्भ

प्रसाद के काव्य में आशा और आस्थावादी दृष्टि

1. प्रसाद, जयशंकर. करूणालय. पृष्ठ **19.**
2. प्रसाद, जयशंकर. करूणालय. पृष्ठ **140.**
3. प्रसाद, जयशंकर. कामायनी 'आशा सर्ग'. पृष्ठ **60–61.**
4. प्रसाद, जयशंकर. कामायनी 'आशा सर्ग'. पृष्ठ **58.**
5. प्रसाद, जयशंकर. कामायनी 'आशा सर्ग'. पृष्ठ **59.**
6. प्रसाद, जयशंकर. कामायनी 'आशा सर्ग'. पृष्ठ **62.**
7. प्रसाद, जयशंकर. आंसू. पृष्ठ **10.**
8. प्रसाद, जयशंकर. लहर. पृष्ठ **25.**
9. प्रसाद, जयशंकर. कामायनी 'आशा सर्ग'. पृष्ठ **33.**
10. प्रसाद, जयशंकर. कामायनी 'आशा सर्ग'. पष्ठ **58.**
11. प्रसाद, जयशंकर. आंसू. पृष्ठ **44.**
12. प्रसाद, जयशंकर. कामायनी 'आशा सर्ग'. पृष्ठ **53.**
13. प्रसाद, जयशंकर. आंसू. पृष्ठ **45.**